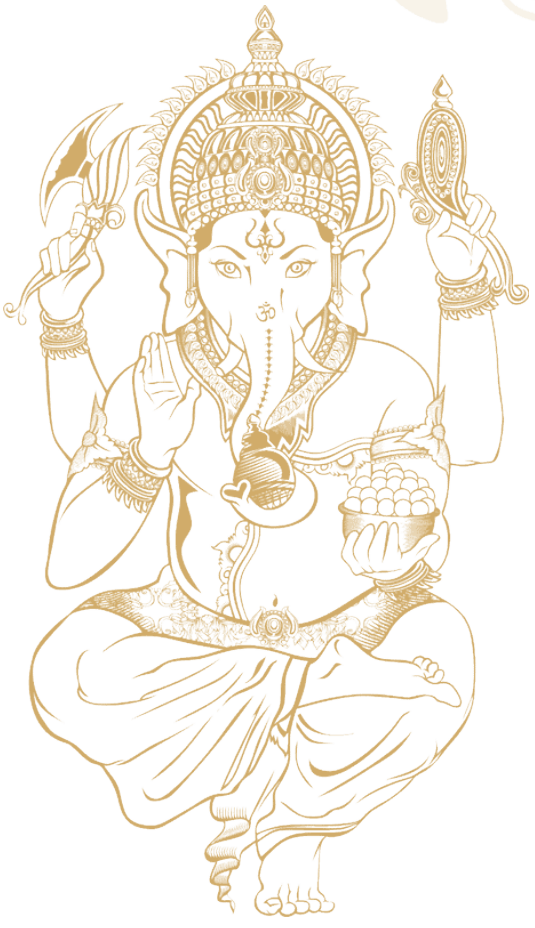

# Chirag agarwal

# Ms.Liesha Gupta

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119880711

| | | |
|---|---|---|
| पुल्लिंग | लिंग | स्त्रीलिंग |
| 06/06/2002 | जन्म तिथि | 18/03/2002 |
| गुरुवार | दिन | सोमवार |
| घंटे 20:15:00 | जन्म समय | 19:30:00 घंटे |
| घटी 36:24:13 | जन्म समय(घटी) | 32:48:32 घटी |
| India | देश | India |
| Hyderabad | स्थान | Hyderabad |
| 17:22:00 उत्तर | अक्षांश | 17:22:00 उत्तर |
| 78:26:00 पूर्व | रेखांश | 78:26:00 पूर्व |
| 82:30:00 पूर्व | मध्य रेखांश | 82:30:00 पूर्व |
| घंटे -00:16:16 | स्थानिक संस्कार | -00:16:16 घंटे |
| घंटे 00:00:00 | ग्रीष्म संस्कार | 00:00:00 घंटे |
| 05:41:18 | सूर्योदय | 06:22:35 |
| 18:48:34 | सूर्यास्त | 18:26:32 |
| 23:53:10 | चित्रपक्षीय अयनांश | 23:52:59 |

| विंशोत्तरी | | अंश | राशि | ग्रह | राशि | अंश | विंशोत्तरी | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| केतु 6वर्ष 3मा 3दि | | 12:20:33 | धनु | लग्न | कन्या | 19:53:56 | शुक्र 5वर्ष 2मा 15दि | |
| शुक्र | | 21:49:55 | वृष | सूर्य | मीन | 03:54:37 | मंगल | |
| 09/09/2008 | | 01:24:36 | मेष | चंद्र | मेष | 23:11:36 | 03/06/2023 | |
| 09/09/2028 | | 12:06:30 | मिथु | मंगल | मेष | 18:03:10 | 03/06/2030 | |
| शुक्र | 09/01/2012 | 07:37:01 | वृष व | बुध | कुंभ | 16:35:20 | मंगल | 30/10/2023 |
| सूर्य | 08/01/2013 | 23:49:50 | मिथु | गुरु | मिथु | 12:12:24 | राहु | 17/11/2024 |
| चन्द्र | 09/09/2014 | 26:25:21 | मिथु | शुक्र | मीन | 19:10:53 | गुरु | 24/10/2025 |
| मंगल | 09/11/2015 | 24:11:50 | वृष | शनि | वृष | 15:30:06 | शनि | 03/12/2026 |
| राहु | 09/11/2018 | 23:58:26 | वृष व | राहु व | वृष | 27:38:42 | बुध | 30/11/2027 |
| गुरु | 10/07/2021 | 23:58:26 | वृश्चि व | केतु व | वृश्चि | 27:38:42 | केतु | 27/04/2028 |
| शनि | 09/09/2024 | 04:56:39 | कुंभ व | हर्ष | कुंभ | 02:46:04 | शुक्र | 27/06/2029 |
| बुध | 11/07/2027 | 16:56:30 | मक व | नेप | मक | 16:16:24 | सूर्य | 02/11/2029 |
| केतु | 09/09/2028 | 22:24:20 | वृश्चि व | प्लूटो | वृश्चि | 23:44:40 | चन्द्र | 03/06/2030 |

## लग्न-चलित

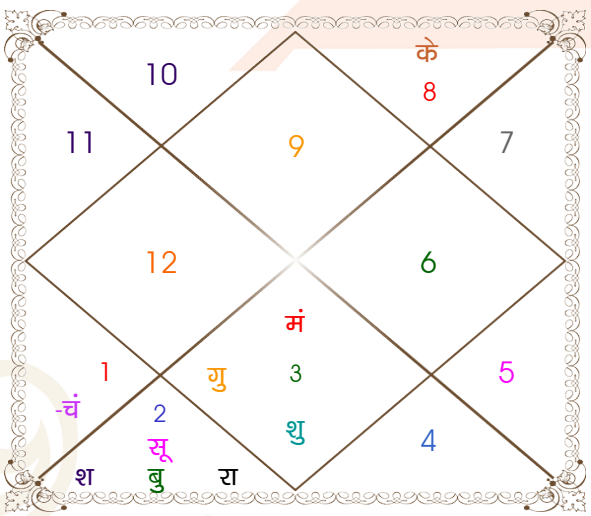


## लग्न-चलित

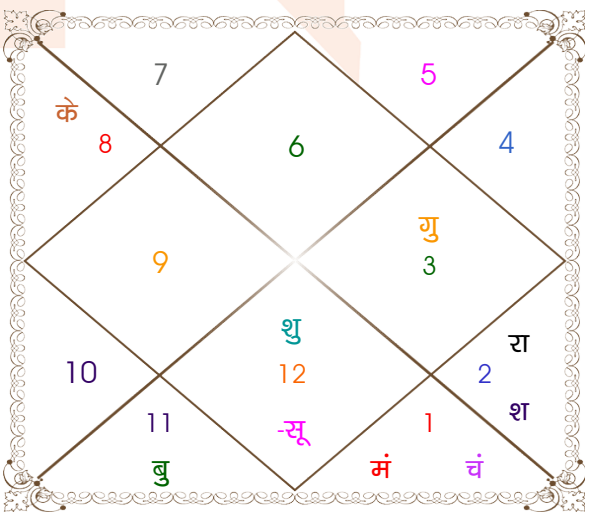

## अष्टकूट गुण सारिणी

| कूट | वर | कन्या | अंक | प्राप्त | दोष | क्षेत्र |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ण | क्षत्रिय | क्षत्रिय | 1 | 1.00 | -- | जातीय कर्म |
| वश्य | चतुष्पाद | चतुष्पाद | 2 | 2.00 | -- | स्वभाव |
| तारा | अतिमित्र | सम्पत | 3 | 3.00 | -- | भाग्य |
| योनि | अश्व | गज | 4 | 2.00 | -- | यौन विचार |
| मैत्री | मंगल | मंगल | 5 | 5.00 | -- | आपसी सम्बन्ध |
| गण | देव | मनुष्य | 6 | 6.00 | -- | सामाजिकता |
| भकूट | मेष | मेष | 7 | 7.00 | -- | जीवन शैली |
| नाड़ी | आद्य | मध्य | 8 | 8.00 | -- | स्वास्थ्य/संतान |
| कुल : | | | 36 | 34.00 | | |

बेपतंह ंहंतूंस का वर्ग सिंह है तथा डेण्स्पर्मी ळनचजं का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर शत्रुता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार बेपतंह ंहंतूंस और डेण्स्पर्मी ळनचजं का मिलान अत्युत्तम है।

## मंगलीक दोष मिलान

बेपतंह ंहंतूंस मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

**कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।**
**न मंगली मंगल राहु योग।**

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु बेपतंह ंहंतूंस कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेण्स्पर्मी ळनचजं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

**तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।**
**विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।**

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल डेण्स्पर्मी ळनचजं कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

**कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।**
**न मंगली मंगल राहु योग।**

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र डेण्स्पर्मी ळनचजं कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

**गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।**

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

**त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।**
**त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।**

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु बेपतंह ंहंतूंस कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

बेपतंह ंहंतूंस तथा डेण्स्पर्मी ळनचजं में मंगलीक मिलान ठीक है।

## निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।